स्मृति संकल्प यात्रा के तहत देश के अलग-अलग हिस्सों में कार्यक्रम जारी

23 मार्च, 2005 को भगत सिंह और उनके साथियों के 75 शहादत वर्ष के आरम्भ पर शुरू की गई स्मृति संकल्प यात्रा के तहत देश के विभिन्न क्रान्तिकारी संगठन पिछले दो वर्षों से भगतसिंह के उस सन्देश पर अमल कर रहे हैं जो उन्होंने जेल की कालकोठरी से नौजवानों को दिया था; कि छात्रों और नौजवानों को ज़रूरत है कि वे क्रान्ति की अलख लेकर गाँव-गाँव, कारखाना-कारखाना, शहर-शहर, गन्दी झोपड़ियों तक जाएँ। इस अभियान के दौरान इन जनसंगठनों ने जो भी जनकार्रवाइयाँ की हम उसका एक संक्षिप्त ब्यौरा देते रहे हैं और इस बार भी यहाँ दे रहे हैं। जिन इलाकों में अभियान की टोलियों ने मुहिम चलाई उनमें उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, नोएडा, ग़ाज़ियाबाद, हापुड़; पंजाब में जालंधर, लुधियाना आदि जैसे शहर और साथ ही दिल्ली समेत पूरा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र भी शामिल है। इनमें से कुछ स्थानों की अभियान सम्बन्धी रिपोर्टें हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

इस 23 मार्च को स्मृति संकल्प यात्रा के दो वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह यात्रा अभी लगभग डेढ़ वर्षों तक, यानी भगतसिंह के जन्मशताब्दी वर्ष के समापन पर ख़त्म होगी। इस अवसर पर दिशा छात्र संगठन और नौजवान भारत सभा की देश के अलग-अलग हिस्सों में मौजूद इकाइयाँ विशेष कार्यक्रम करेंगी। इस अंक के आने तक देश के अलग-अलग हिस्सों में जो अभियान चल रहे हैं उनकी रिपोर्ट इस बार के अंक में दी जा रही हैं। इन तीन वर्षों के दौरान ये दोनों ही संगठन अपनी सभी गतिविधियों को स्मृति संकल्प यात्रा के बैनर तले ही कर रहे हैं।

— सम्पादक

करावलनगर इलाके में स्मृति संकल्प यात्रा के तहत दो दिवसीय सघन साईकिल यात्रा

दिल्ली। अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद के 77वें शहादत वर्ष (27 फरवरी) की पूर्व संध्या पर दिशा छात्र संगठन और नौजवान भारत सभा ने संयुक्त रूप से दो दिवसीय साईकिल यात्रा निकाली। इस यात्रा में नौजवानों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

करीब पच्चीस नौजवानों की टोली ने साईकिल यात्रा के दौरान गली-गली और मुहल्ले-मुहल्ले जाकर लोगों के बीच व्यापक और सघन जनसभाएँ कीं और क्रान्तिकारी गीतों, भाषणों, नुक्कड़ नाटकों और पर्चा वितरण के जरिये भगतसिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद और उनके साथियों के विचारों से लोगों को परिचित कराया और बताया कि उन अमर शहीदों ने एक ऐसे भारत का सपना नहीं देखा था जिसमें रोज़ भूख और कुपोषण से हज़ारों बच्चे मर जाते हैं और गोदामों में अनाज सड़ता रहता है, उन्होंने एक ऐसे भारत का सपना नहीं देखा था जिसमें लोकतंत्र के नाम पर चोर, लुटेरे, अपराधी, बलात्कारी और भ्रष्टाचारी आम मेहनतक़श जनता की छाती पर मूँग दलें। इन नौजवानों ने एक नये परिवर्तन के लिए संघर्ष की नये सिरे से तैयारी का संकल्प लिया और जनता का इसके लिए आह्वान किया।

यह साईकिल रैली मुकुन्द विहार से निकलकर प्रकाश विहार गई और फिर इसने अंकुर एंक्लेव, भगतसिंह कॉलोनी, कमल विहार, शिवविहार होते हुए मुस्तफ़ाबाद, गोविन्द विहार के इलाकों का व्यापक क्षेत्र कवर किया और कई नुक्कड़ सभाएँ कीं। नुक्कड़ सभाओं में नौजवानों और मज़दूरों को आज की स्थितियों से वाकिफ़ कराते हुए चुनावबाज़ पार्टियों की पोल-पट्टी खोली गयी। यह बताया गया कि 60 साल की आज़ादी की हक़ीकत जगजाहिर हो चुकी है। ऐसे में शहीदों को सिर्फ़ रस्मअदायगी के तौर पर नहीं बल्कि एक संकल्प-वरण के रूप में याद करना और उनके विचारों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

साईकिल यात्रा में 'तोड़ो बन्धन तोड़ो', 'गर थाली आपकी खाली है', 'ये फैसले का वक़्त है', आदि जैसे क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये गये।

स्मृति संकल्प यात्रा के तहत दिल्ली विश्वविद्यालय में नुक्कड़ नाटक

दिशा छात्र संगठन की सांस्कृतिक टोली 'विहान' ने दिल्ली विश्वविद्यालय में कई स्थानों पर नुक्कड़ नाटकों और क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति की। पहले 10 जनवरी को दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स की कैण्टीन में एक एकल म्यूज़िक कंसर्ट किया गया। इस कंसर्ट में 'बीस्तीर्णो दुपारेर', 'दरबारे-वतन में', 'इमैजिन', और 'बड़ी-बड़ी कोठिया' जैसे गीत प्रस्तुत किये गये। इसके बाद 2 फरवरी को नॉर्थ कैम्पस के आर्ट्स फैकल्टी में नयी इमारत की

कैण्टीन के सामने विहान की टीम ने 'देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच' नामक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया जिसमें संसदीय लोकतंत्र की धज्जियाँ उड़ायी गयी हैं। इस कार्यक्रम में बात रखते हुए दिशा छात्र संगठन के प्रसेन ने देश भर में फैलाये जा रहे साम्प्रदायिक उन्माद की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि छात्रों को विशेष रूप से साम्प्रदायिक फासीवादी शक्तियों की इस साज़िश को समझना चाहिए और इसका पर्दाफाश करके इसके विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए।

इसके बाद दिशा छात्र संगठन की शिवानी ने अपनी बात रखते हुए कहा कि निठारी काण्ड ने इस पूरी सभ्यता के नरभक्षीपन को उघाड़कर हमारी आँखों के सामने रख दिया है। यह सिर्फ़ निठारी के उन मेहनतकशों का मसला नहीं है जिनके बच्चों के साथ यह बर्बर कृत्य किया गया। यह हरेक संवेदनशील और न्यायप्रिय नौजवान के सामने यह सवाल खड़ा करता है कि आख़िर किस व्यवस्था में घुसने के लिए वे एड़ियाँ घिस रहे हैं? एक ऐसी व्यवस्था जिसके कर्ता-धर्ता और मालिक, जिनके इशारों पर पुलिस और पूरी नौकरशाही नाचती है, अपने मुनाफ़े और शरीर की हवस में बच्चों तक को नहीं बख्शते हैं? अन्त में शिवानी ने कहा कि आज दो ही रास्ते हमारे सामने हैं—इंक़लाब के जरिये एक समतामूलक और मानव-केन्द्रित समाज, या फिर बर्बरता और विनाश!

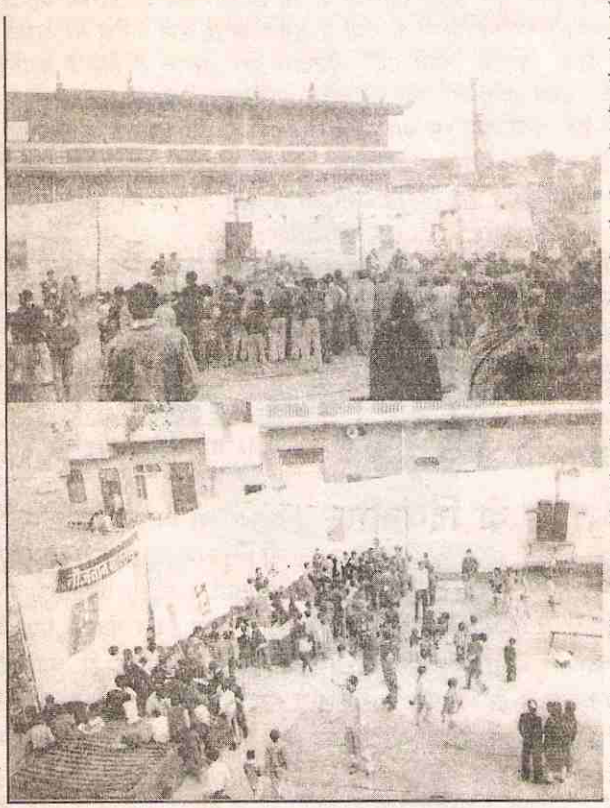

नौजवान भारत सभा द्वारा आयोजित रचनात्मक जनमेला के कुछ दृश्य

इसके बाद 'दरबारे-वतन में', 'पैसा', 'जय श्री राम-जय श्री राम-आलू प्याज़ के इतने दाम', और 'आह्वान गीत' जैसे क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये गये। अन्त में दिशा के संयोजक अभिनव ने कहा कि आज के समय में सच्चा नौजवान उसे ही कहा जा सकता है जो सिर्फ़ अपने कैरियर के लिए अन्धा न होकर, इस समाज को बदलने की लड़ाई में शिरकत करता है। यह समाज अस्सी फीसदी लोगों के जीवन की पूर्वशर्तों को पूरा नहीं करता और उन्हें पशुओं जैसा जीवन जीने पर विवश करता है। एक ऐसे समाज में कोई भी सच्चा नौजवान सिर्फ़ अपने बारे में कैसे सोच सकता है, ख़ास तौर पर तब जबकि उसके अस्तित्व की एक-एक शर्त वही अस्सी फीसदी आबादी पूरी करती है, चाहे वह रोटी, कपड़ा और मकान हो या फिर उसके जीवन की तमाम सुख-सुविधाएँ। दिशा से जुड़ने का आह्वान करते हुए अभिनव ने कहा कि किसी भी चुनावबाज़ पार्टी का लग्गू-भग्गू बनकर नौजवान अपना भविष्य नहीं सँवार सकते। रास्ता यही है कि नौजवान एक ऐसी देशव्यापी क्रान्तिकारी पार्टी के निर्माण में अपनी अगुवा भूमिका को समझें और उसे निभाने के लिए आगे आएँ, जो लोकस्वराज्य व्यवस्था लाने की तरफ़ आगे बढ़े जिसमें उत्पादन, राजकाज और समाज के पूरे ढाँचे पर उत्पादन करने वाले वर्गों का हक़ हो और फैसले लेने की ताक़त उनके हाथों में हो।

इसके बाद 20 फरवरी को नॉर्थ कैम्पस के ही हंसराज कॉलेज में विहान की टीम ने एक म्यूज़िक कंसर्ट किया। इसमें भी कई क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति की गयी। इससे पहले प्रशासन द्वारा कार्यक्रम में बाधा डालने का प्रयास किया गया। इस पर बात रखते हुए दिशा के मिथिलेश ने कहा कि आज विश्वविद्यालय की पूरी अवधारणा को ही विकृत बनाया जा रहा है। एक दौर था जब विश्वविद्यालय मुक्त अभिव्यक्ति और जनवाद का गढ़ हुआ करते थे। लेकिन आज शासक वर्ग अपने भय के कारण विश्वविद्यालय कैम्पसों का घेटोकरण कर रहे हैं। इस साज़िश को समझने और इसे नाक़ाम करने के लिए नये सिरे से छात्र अधिकारों और कैम्पस के जनवादीकरण की लड़ाई छेड़नी होगी।

इन कार्यक्रमों में दिशा छात्र संगठन को छात्रों ने उत्साहपूर्वक समर्थन दिया और उससे जुड़ने की इच्छा जताई। छात्रों ने दिशा की टीम के साथ पतों और फोन नम्बरों का आदान-प्रदान किया।

नये साल की पूर्वसन्ध्या पर नौजवान भारत सभा द्वारा रचनात्मक जनमेला

करावलनगर, दिल्ली। नववर्ष की पूर्व संध्या पर नौजवान भारत सभा और बच्चा पार्टी ने संयुक्त तौर पर सांस्कृतिक रचनात्मक जनमेला का आयोजन किया। इस अवसर पर बच्चों द्वारा नाटक व गीतों की प्रस्तुति के अलावा कला व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता भी ओयाजित की गयी। स्थानीय लोगों ने इस रचनात्मक मेले की सराहना की और उसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इस अवसर पर नौजवान भारत सभा के संयोजक आशीष ने बताया कि यह मेला दो वर्षों से जारी स्मृति संकल्प यात्रा के तहत ही आयोजित किया गया है। स्मृति संकल्प यात्रा का उद्देश्य देश भर में भगतसिंह के क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार-प्रसार है और इसका एक अंग यह भी है कि जनता के बीच के अलगाव और पार्थक्य को तोड़ा जाय। ऐसी संस्थाएँ होनी चाहिए जहाँ लोग मिलें और एक-दूसरे के दुख-सुख से जुड़ें। ऐसी संस्थाएँ आगे चलकर प्रतिरोध के मंच के रूप में भी विकसित की जा सकती हैं। साथ हीं ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों में जनता के बीच स्वस्थ सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करने का काम भी इंक़लाब के व्यापक प्रोजेक्ट से जुड़ा हुआ कार्य है, क्योंकि एक सुरुचि-सम्पन्न जनता ही परिवर्तन के विचारों को आत्मसात कर सकती है।

शान्ति निकेतन स्कूल के सामने मैदान में लगे इस मेले में सुबह से ही रौनक का माहौल था। बच्चा पार्टी के सदस्यों ने इस जगह को रंग-बिरंगी झण्डियों से सजाया और कई खेलों के स्टॉल भी लगाये। बच्चों की 'सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' मेले का मुख्य आकर्षण बन गयी। इस प्रतियोगिता में टीमों का नामकरण भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, गणेश शंकर विद्यार्थी और चन्द्रशेखर आज़ाद के नामों पर किया गया। इन टीमों के बीच सम्पन्न हुई प्रतियोगिता में सुखदेव टीम विजयी रही। छोटे-छोटे बच्चों ने अपने परिवेश और इंक़लाबी शहीदों के बारे में अपनी जानकारी से लोगों को हैरान कर दिया।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के अतिरिक्त बच्चों के अलग-अलग आयु वर्गों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। इसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और पुरस्कार में बच्चों को पुस्तकें दी गयीं। बच्चों की कला प्रतियोगिता में नितिन, कीर्ति, शिवम व शालू पुरस्कृत हुए और सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में पुरस्कार किशन, शिवानी, अमर व सचिन की सुखदेव टीम को मिला।

शाम होते ही मंच के सामने लोगों की भीड़ जमा हो गयी क्योंकि अब सांस्कृतिक संध्या शुरू होने का समय आ गया था। इस कार्यक्रम में बच्चा पार्टी के बच्चों ने 'सरकारी साँड़' नामक नाटक का मंचन किया। साथ ही बच्चों ने 'यारो! यही दोस्ती है', व 'प्यार बाँटते चलो' जैसे गीत पेश करके आपसी भाईचारे को बढ़ावा देने का सन्देश दिया। नौभास की टोली ने सफ़दर हाशमी के नाटक 'समरथ को नहीं दोष गुसाँई' का मंचन किया और व्यवस्था का पर्दाफ़ाश किया। इसके अतिरिक्त नौभास के सदस्यों ने 'आ गये यहाँ जवाँ कदम...', व 'कदम मिलाओ साथियो...' नामक गीतों की प्रस्तुति की। मेले में क्रान्तिकारियों के जीवन पर फोटो प्रदर्शनी व पुस्तक प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। इन प्रदर्शनियों ने लोगों को काफ़ी आकर्षित किया।

मेले का संयोजन नौजवान भारत सभा के आशीष कुमार ने किया। अन्त में, आशीष ने कहा कि स्मृति संकल्प यात्रा के तहत ऐसे कार्यक्रम अगले डेढ़ वर्षों तक भी जारी रहेंगे। ऐसे मेले और सांस्कृतिक कार्यशालाएँ आयोजित करके नौजवानों और बच्चों में बेहतर मानवीय मूल्य, तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि और इंसाफ़पसन्दगी के उसूल पैदा करने का काम जारी रखा जाएगा।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) के अवसर पर विचार गोष्ठी

दिल्ली। नौजवान भारत सभा ने 8 मार्च को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। परिचर्चा का विषय 'इक्कीसवीं सदी और महिलाओं की स्थिति' था।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए योगेश ने नारी सभा के पर्चे 'बहनो आओ! साथियो आओ!' को पढ़कर सुनाया। इस पर्चे में हज़ारों साल से पितृसत्ता के जुए तले दबी औरतों का आह्वान किया गया है कि वे इस बोझ को अपने कन्धों से उतार फेंकें। आज स्त्रियाँ पितृसत्ता और पूँजीवाद दोनों की मार झेल रही हैं।

परिचर्चा में अपनी बात रखते हुए नौभास के प्रेमप्रकाश ने महिलाओं की स्थिति पर ऐतिहासिक नज़रिये से अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि एक ऐसा समय भी था जब महिलाएँ गुलाम नहीं थीं और दुनिया पर उनका बराबर का हक़ था। लेकिन निजी सम्पत्ति की व्यवस्था के उदय के साथ और श्रम विभाजन के गहराते जाने के साथ महिलाओं की अधीनता की शुरुआत हुई।

ओलेग ने सामाजिक अपराधों का शिकार महिलाओं पर अपनी बात रखते हुए कहा कि महिलाओं की स्थिति जानने के लिए यह तथ्य ही पर्याप्त है कि हर 3 मिनट पर एक स्त्री का बलात्कार होता है और हर 77 मिनट पर एक स्त्री जलाकर मार दी जाती है। दीपक ने बताया कि कामकाजू महिलाओं की स्थिति तो और भी ख़राब है। एक ओर तो उनका श्रम सस्ता होता है वहीं दूसरी ओर उन्हें उद्योगों में सबसे महीन और मुश्किल काम करने पड़ते हैं। फिर घर में पुरुष की गुलामी उनके जीवन और असह्य बना देती है।

नौभास की सीता ने कहा कि महिलाओं को विज्ञापनों के जरिये उपभोक्ता सामग्री बनाकर बेचा जाता है। यह एक नये प्रकार की गुलामी है जो आज़ादी के भेस में आयी है। सामन्ती किस्म की पितृसत्ता की जगह अब पूँजीवादी पितृसत्ता और पैसों की गुलामी ने ले ली है। सीता ने स्पष्ट किया कि महिलाओं की मुक्ति की लड़ाई पुरुषों के ख़िलाफ़ नहीं हैं और सारे पुरुष महिलाओं के शत्रु हों, ऐसा कतई नहीं है। यह लड़ाई पूँजी की सत्ता के ख़िलाफ़ है।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे आशीष ने बताया कि आम घरों में और मेहनतकशों के घरों में महिलाओं और पुरुषों का जो अन्तरविरोध है उसे हमें दोस्ताना अन्तरविरोध के रूप में सुलझाना होगा जिसके लिए एक सांस्कृतिक संघर्ष की ज़रूरत होगी। असली अन्तरविरोध इस पूँजीवादी व्यवस्था से है जो ग़रीबों और मेहनतकशों को लूटती है, चाहे वे स्त्री हों या पुरुष, दलित हों या सवर्ण, दिल्ली के हों या बिहारी, यूपी के हों या महाराष्ट्र के, कोई भी भाषा बोलते हों। सभी ग़रीब स्त्रियों और पुरुषों को अपने अन्तरविरोधों को दोस्ताना ढंग से हल करना होगा और विशेष रूप से पुरुषों को यह समझना होगा कि स्त्रियाँ आधी ज़मीन और

आधा आसमान हैं। वे किसी भी मायने में उनसे कम नहीं हैं।

इस अवसर पर नौजवान भारत सभा की तरफ़ से एक पर्चा 'जी हाँ! बाज़ार में रिश्ते भी बिकते हैं!' भी निकाला गया जिसमें दहेज लोभियों को धिक्कारा गया है और उनके सामाजिक बहिष्कार का आह्वान किया गया है। आशीष ने बताया कि भगतसिंह के सपनों का भारत तब तक नहीं बनाया जा सकता जब तक आधी आबादी गुलाम है। साथ ही स्त्रियाँ भी मेहनतकश अवाम की लड़ाई के साथ अपनी आज़ादी की लड़ाई को जोड़कर ही मुक्त हो सकती हैं।

निठारी काण्ड के ख़िलाफ़ पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रा में सघन एवं व्यापक पर्चा वितरण

दिल्ली, नोएडा, ग़ाज़ियाबाद। निठारी में बच्चों की बर्बर हत्या और नरभक्षण के ख़िलाफ़ नौजवान भारत सभा, दिशा छात्र संगठन और हण्ड्रेड फ्लावर्स मार्क्सवादी अध्ययन मण्डल ने दिल्ली के तमाम मज़दूर इलाकों, कालोनियों, कॉलेजों, स्कूलों आदि में एक पर्चा बाँटा। इस पर्चे को लेकर दिशा और नौभास की टोलियों ने नुक्कड़ों-चौराहों, गलियों-मुहल्लों और कॉलोनियों में व्यापक जनसभाएँ कीं।

इन सभाओं में साफ़ तौर पर कहा गया कि निठारी की घटना आज के समाज की कोई आम घटना नहीं है और न ही यह महज प्रातिनिधिक घटना है। यह इस पूँजीवादी समाज, सभ्यता, संस्कृति और व्यवस्था की एक प्रतीक घटना है। यह हालिया वर्षों में भारत में ही नहीं पूरी दुनिया के पूँजीवाद के अन्तर्गत होने वाली सम्भवतः सबसे बर्बर घटना है, जहाँ मुनाफ़े और शरीर की हवस मिटाने के लिए एक पूँजीपति बच्चों का बलात्कार करता था और उन्हें मारकर खाता था। यह घटना दिखलाती है कि पूँजीवाद के अन्तर्गत लोभ-लालच और हवस किस तरह पूँजीपतियों को भी मानव होने की शर्तों से वंचित कर देती है। किस तरह पूँजीपति कारखानों में मज़दूरों के शरीर से रक्त की एक-एक बूँद निचोड़ने के बाद भी अपनी हवस मिटा नहीं पाता और फिर उनके बच्चों के साथ ऐसा बर्ताव करता है। इस घटना ने पूँजीवाद के हर मुखौटे को उतार दिया है। इस घटना ने पूँजीपति वर्ग और उसके हर चाकर–पुलिस, नेता, अफ़सर–और साथ ही साथ न्यायपालिका को भी बेनक़ाब कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट का बयान आया कि निठारी काण्ड पुलिस सुधारों के लागू न हो पाने के कारण हुआ। यह पूरा तर्क ही बेहद बचकाना है। सवाल यह है कि वह कौन सा समाज है जो ऐसे दरिन्दों को पैदा करता है जो बच्चों तक का भक्षण कर जाएँ।

जगह-जगह चायखानों, नुक्कड़ों, सैलून और खाने-पीने की दुकानों में भीड़ जुटाकर लोगों को इस पर्चे को पढ़कर सुनाया गया। लोगों में इस घटना को लेकर ज़बर्दस्त रोष था।

दिशा छात्र संगठन ने कॉलेजों में कक्षाओं में जा-जाकर इस पर्चे का वितरण किया और छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह सिर्फ़ निठारी के पीड़ित माता-पिताओं से सरोकार रखने वाला मुद्दा नहीं है। यह हर संवेदनशील दिल को झकझोर देने वाला मुद्दा है और इस घटना के बाद हर नौजवान को सोचना चाहिए कि वह किस समाज में प्रशासनिक सेवाओं में जाना चाहता है? जिस समाज की कानून और व्यवस्था का अर्थ मेहनतकशों के बच्चों का मांसभक्षण है? जिस समाज में अस्सी फीसदी जनता पूँजीपतियों की हर भूख को मिटाने के लिए मजबूर की जाती है? ऐसी व्यवस्था को बदलने के बारे में सोचना और उसे ख़त्म कर देने के बारे में सोचना हर नौजवान दिल की फ़ितरत होनी चाहिए। इस पर्चे पर कक्षाओं में, कैण्टीनों में और तमाम सार्वजनिक स्थानों पर काफ़ी बहसें हुई और लोगों ने इस बात पर सहमति जताई कि यह इस व्यवस्था की बुनियादी रुग्णता है जो इस प्रकार की घटनाओं को जन्म देती है।

नौजवान भारत सभा ने जलाई बुराइयों की होलिका

दिल्ली। 3 मार्च को होलिका दहन के दिन नौजवान भारत सभा और बच्चा पार्टी ने बिल्कुल अलग अंदाज़ में होलिका दहन किया। बच्चों और नौजवानों ने यह निर्णय लिया कि स्मृति संकल्प यात्रा की मुहिम के तहत ही इस होली पर परम्परागत और औपचारिक ढंग से होने वाले होलिका दहन को सामाजिक बुराइयों के पुतला दहन में बदल दिया जाय और पुतला दहन से पहले पुतले को लेकर पूरे अंकुर एंक्लेव और मुकुन्द विहार के इलाके में जुलूस निकाला जाय। बच्चों और नौभास के कार्यकर्ताओं ने मिलकर बुराइयों का पुतला तैयार किया जिसपर दहेज, पारिवारिक हिंसा, छुआछूत, पाखण्ड, अश्लीलता, जातिगत भेदभाव, धार्मिक भेदभाव, शराबखोरी आदि लिखा गया।

इसके बाद बच्चों ने बच्चा पार्टी के संयोजक तुषार के नेतृत्व में पुतले को लेकर जुलूस निकालना शुरू किया। बच्चे 'नशाखोरी-दूर भगाओ', 'ढोंग-पाखण्ड मार भगाओ', 'जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो-सही लड़ाई से नाता जोड़ो', 'आज के हम बच्चे, कल के हम नौजवान-भारत को बदलने में देंगे अपना योगदान', आदि जैसे नारे लगाते हुए गली-गली से गुज़र रहे थे। बच्चे जिस गली से गुज़रते वहीं से कुछ बच्चे उनके साथ शामिल हो जाते। साथ ही, इन बच्चों के माता-पिता भी यह देखने के लिए पीछे-पीछे हो लिए कि आख़िर ये बच्चे कर क्या रहे हैं?

यह जुलूस एक ख़ाली मैदान में समाप्त हुआ जहाँ जाकर बच्चों ने पुतले को गाड़ दिया और फिर नारेबाज़ी की। इसके बाद बच्चा पार्टी के बच्चों ने 'प्यार बाँटते चलो' नामक गीत गाया। इसे सुनकर आस-पास के घर से लोग बाहर निकल आये। फिर तुषार ने जुलूस निकालने की वजह पर अपनी बात रखते हुए कहा कि होली के दिन लोग शराब पीकर हो-हल्ला करते हैं, घरों में मारपीट करते हैं, अश्लीलता करते हैं, यह रुकना चाहिए। तुषार ने कहा कि सच्ची होलिका दहन आज समाज की बुराइयों के दहन के साथ ही हो सकती है। उसी के प्रतीक के तौर पर हम सामाजिक बुराइयों का होलिका दहन कर रहे हैं।

इस समय तक कार्यक्रम स्थल पर करीब 80 बच्चे और कइयों के माता-पिता इकट्ठा हो चुके थे। इसके बाद पुतले को जलाया गया और नारेबाज़ी की गयी। इसके बाद सारे लोगों ने एक-दूसरे के माथे पर गुलाल लगाया और गले मिले। और इस तरह सामाजिक अलगाव को भेदता हुआ एक सामाजिक उत्सव मनाया गया।

नौजवान भारत सभा, करावलनगर इकाई का चुनाव सम्पन्न

करावलनगर, दिल्ली। नौजवान भारत सभा करावलनगर इलाके में पिछले 4 वर्षों से काम कर रही है। इसने इलाके के लोगों के हर संघर्ष में कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया है और इन संघर्षों को सक्षम नेतृत्व दिया है, चाहे वह हिरासत में मौत का मुद्दा हो, सड़क निर्माण का मुद्दा हो या साफ़-सफ़ाई के अधिकार का मुद्दा हो।

नौजवान भारत सभा, करावलनगर इकाई औपचारिकीकरण समारोह का एक दृश्य

लम्बे समय से नौजवान भारत सभा के सदस्यता ढाँचे के औपचारिकीकरण का काम चल रहा था जो अंततः 25 फरवरी, 2007 को सम्पन्न हो गया। इस दिन नौजवान भारत सभा मुकुन्द विहार-अंकुर एंक्लेव इकाई का चुनाव हुआ। इससे पहले मुकुन्द विहार और अंकुर एंक्लेव में घर-घर जाकर सदस्यता अभियान चलाया गया जिसमें करीब 45 नौजवान नौभास के सदस्य बने। इसके बाद 25 फरवरी को चुनाव का आयोजन हुआ। इस चुनाव में योगेश को नौभास की इस इकाई का सचिव और संजय को उपसचिव चुना गया। तर्कप्रसार प्रकोष्ठ के प्रभारी के तौर पर आशु और सहायक के तौर पर रेनू को चुना गया। सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रदीप और सहायक नीरज चुने गये। खेलकूद प्रकोष्ठ के प्रभारी दीपक और सहायक तरुण चुने गये। अध्ययन प्रकोष्ठ का प्रभारी आशीष और सहायक प्रेमप्रकाश को चुना गया।

इसके बाद 1 मार्च को चुने गये पैनल की पहली बैठक हुई जिसमें मार्च माह के लिए स्मृति संकल्प यात्रा के तहत लिया जाने वाला कार्यक्रम बनाया गया और ज़िम्मेदारियाँ तय की गयीं।

मर्यादपुर, मऊ में नागरिक अधिकारों के लिए ज़बर्दस्त संघर्ष

ग्राम पंचायत और सरकारी मशीनरी की मिलीभगत से होने वाली जनसंसाधनों की लूटखसोट के ख़िलाफ़ और अपने बुनियादी अधिकारों के लिए ग्राम सभा मर्यादपुर के सैंकड़ों ग़रीब मेहनतकशों ने विगत 23 फरवरी को मधुबन तहसील मुख्यालय पर बिगुल मज़दूर दस्ता, देहाती मज़दूर यूनियन और नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में ज़ोरदार धरना प्रदर्शन किया और उपजिलाधिकारी को सोलह-सूत्री मांगपत्रक सौंपा।

माँगपत्रक में राशनकार्ड, किरासन व खाद्यान्नों के वितरण में धाँधली की जाँच कर पात्र व्यक्तियों को उचित राशन कार्ड व निर्धारित मात्रा में अनाज व किरासन तेल का वितरण सुनिश्चित कराने, विधवा पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन व निर्बल आवास योजना की धाँधलियों की जाँच कर पात्र लोगों को योजना का लाभ सुनिश्चित कराने के साथ ही इन तमाम धाँधलियों में लिप्त लेखपाल सेक्रेटरी को बर्खास्त करने की माँग शामिल थी। इसके अलावा स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए डीप बोर हैण्डपम्प लगाने, बन्द पड़े जच्चा-बच्चा केन्द्र को चालू करने, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने, सार्वजनिक उपयोग की भूमि को निजी कब्ज़े से आज़ाद करने की माँगें भी प्रमुख रूप से शामिल थीं।

इससे पहले सैंकड़ों की संख्या में ट्रैक्टरों और ट्रॉलियों में सवार होकर प्रदर्शनकारी धरनास्थल के पास एकत्र हुए और फिर ज़ोरदार सभा की। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश किया गया। इस सभा के दौरान देहाती मज़दूर यूनियन के डा. दूधनाथ ने कहा कि अभी तो हम लोगों ने सिर्फ़ ग्राम पंचायतों और सरकारी मशीनरी की लूट के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी है, अपने बुनियादी अधिकारों के लिए ललकारा है, लेकिन आने वाले दिनों में देश में देशी-विदेशी पूँजी की लूट के ख़िलाफ़ एक देशव्यापी संघर्ष की हमें शुरुआत करनी होगी और भगतसिंह के सपनों के भारत के निर्माण की ओर बढ़ना होगा।

धरना स्थल पर क्रान्तिकारी लोकगीतों के जरिये भी लेखपाल-सेक्रेटरी-प्रधान की लूटखसोट को उजागर किया गया और मेहनतक़शों की एकता के लिए आह्वान किया गया। इस धरने में व्यापक पर्चा वितरण भी किया गया। प्रदर्शन के दौरान 'मेहनतकश जब जागेगा, तब नया सवेरा आएगा', 'ख़त्म करो पूँजी का राज-लड़ो बनाओ लोकस्वराज्य', 'गाँव के ग़रीबों ने दी है आवाज़-नहीं चलेगा लूट का राज' और 'सारी सत्ता मेहनतक़श को' आदि जैसे नारे लगाए जा रहे थे।

इस प्रदर्शन में गोरखपुर विश्वविद्यालय से आये दिशा छात्र संगठन के कार्यकर्ताओं ने भी बढ़चढ़कर शिरकत की।